ACKNOWLEDGEMENT

कोई भी कार्य करने के लिए अनेक लोगों की मदद और साथ–सहकार होना अत्यंत आवश्यक होता है । मुझे भी इस सफल पी.एच.डी. के कार्य के लिए अनेक लोगों का साथ–सहकार तथा प्रोत्साहन मिला । जिससे मेरा यह शोधकार्य सफलतापूर्वक पूर्ण करने का मैने प्रयास किया । इस कार्य के लिए प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मुझे जो मदद मिली उन सभी गुणिजनो को मैं अत्यंत तहेदिल से शुक्रियाँ अदा करना चाहता हुँ और उनके प्रति मैं सदा ऋणि रहूंगा ।

बाल्यकाल से हि मुझे संगीत के प्रति आकर्षण था । अतः मेरी माताजी श्रीमती निला खेर जी स्वयं एक उतकृष्ट किराना घराने की गायिका है । इसलिए संगीत का वातावरण मुझे जन्म से ही मिला । संगीत में मुझे तबला वाद्य के प्रति खास आकर्षण था । तबले का शिक्षण मैने तिसरी कक्षा से ही सिखना प्रारंभ किया । मेरे प्रथम गुरु आदरणिय श्री प्रभाकर दाते जी, जिन्होंने मुझे तबले पर हाथ रखना सिखाया । इस तरह मेरा क्रमशः सांगीतिक प्रवास शुरु हुआ । गुरुजी के आशिर्वाद से मैंने सन् २००६ में 'संगीत विशारद'की पदवी तबला विषय में प्रथम श्रेणी के साथ पूर्ण किया । तत् पश्चात् शालेय काल में मैने फेकल्टी ऑफ परफोंमिंग आट्र्स, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बडौदा से तबला विषय में विशेष योग्यता के साथ 'डिप्लोमा इन म्युझिक' पूर्ण किया । सन् २००९ में वाणिज्य विषय में स्नातक कि पदवी प्रथम श्रेणी के साथ उत्तिर्ण की । सन् २०१० में मैने तबला विषय में 'संगीत अलंकार' की पदवी गांधर्व महाविद्यालय मंडल, मुंबई से हाँसिल की । जिस में, समग्र गुजरात राज्य में मेरा प्रथम क्रमांक आया । जिसका श्रेय मेरे सभी गुरुजनों को देता हूँ । सन् २०१४ में तबला विषय में फेकल्टी ऑफ परफोंमिंग आट्र्स, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बडौदा से मैने 'मास्टर्स ऑफ म्युझिक' कि पदवी विशेष योग्यता एवं 'सुवर्ण पदक' के साथ हाँसिल की ।

अनेक गुरुजनों के माध्यम से मुझे प्रत्यक्ष रूप से तबला सिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । जिस में आदरणिय पं. बालकृष्ण महंत जी, पं. पुष्कराज श्रीधर जी, प्रोफे. डॉ. अजय अष्टपुत्रे जी, श्री नंदकिशोर दाते जी, डॉ. केदार मुकादम जी तथा डॉ. गौरांग भावसार जी का योगदान अमूल्य है और अनेक तबला कार्यशाला के माध्यम द्वारा प्रसिद्ध गुणिजनों के मार्गदर्शन से मै लाभान्वित

हुआ । जिस में पं. सुरेश तळवलकर जी, पं. योगेश समसी जी, पं. सुशिलकुमार जैन जी, पं. किरण देशपांडे जी, श्री आमोद दंडगे जी जैसे अनेक विद्वानों से मुझे तबला सिखने का अवसर प्राप्त हुआ ।

बडौदा नरेश कै. श्रीमंत महाराजा रणजितसिंह जी गायकवाड जी उत्तम गायक थे । जिनके साथ मुझे १० वर्ष तक तबले की साथ–संगत करने का बडा अवसर प्राप्त हुआ । जिनकी प्रेरणा से मैने तबला विषय में पी.एच.डी. पूर्ण करने का प्रयास किया । मेरे इस शोधकार्य में मार्गदर्शक के रूप में आदर्श गुरु प्रोफे. डॉ. अजय अष्टपुत्रे जी का अत्यंत प्रेरणारूप मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, जिसके लिए मैं अष्टपुत्रे जी का सदा ऋणि रहूँगा । डॉ. अष्टपुत्रे जी के माध्यम से मुझे शोधकार्य करने के लिए अनेक गुणिजनों के साथ प्रत्यक्षरूप से साक्षात्कार करने का मौका मिला । जिस में पं. सुधिर माईणकर जी, स्व. पं. अरविंद मुळगाँवकर जी, पं. नयन घोष जी, पं. सुरेश तळवलकर जी, पं. पुष्कर्राज श्रीधर जी, पं. किरण देशपांडे जी, श्री आमोद दंडगे जी, श्री प्रविण करकरे जी, पं. उमेश मोघे जी, डॉ. गौरांग भावसार जी, डॉ. केदार मुकादम जी, डॉ. चिरायु भोळे जी प्रमुख रूप से है । जिनका मै सदा ऋणि रहूँगा ।

मेरे शोधकार्य करने में मेरे प्रेरणादायी आदरणीय पिताजी श्री सतिष लक्ष्मणराव खेर तथा माताजी श्रीमती निला सतिष खेर जी का अमूल्य योगदान रहा है जिन्हें में अंतःकरण से प्रणाम करता हूँ । जिनके सहयोग बिना मेरा यह शोधकार्य पूर्ण करना कठिन था । यह शोधकार्य के लिए जिन्होंने मुझे मुद्रणकार्य में सहयोग दिया उन में श्री सुभाष शिंदे और श्री निनाद मेटकर का और मेरे अनुज श्री सिद्धांत देशमुख का तथा तकनिकी सहाय के लिए डॉ. भरतभाई देसाई जी का अत्यंत महत्व का योगदान रहा है इन सभी का मैं हृदय से धन्यवाद करना चाहता हूँ । इस के अतिरिक्त संपूर्ण तबला विभाग तथा कार्यालय के सभी कर्मचारीयों का (फेकल्टी ऑफ परफोंमिंग आटर्स, म.स.विश्वविद्यालय, बडौदा) शुक्रियाँ अदा करना चाहता हूँ । इसके अलावा जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मेरे शोधकार्य में मदद की उन सभी का मैं आभारी हूँ ।

अमित सतिष खेर